सुबह सवेरे
A Daily News Magazine
13 Mar 2025 - Page 5

एक बेहतरीन भारत गढ़ने की दिशा में ठोस कदम साहित्योत्सव

साहित्य महाकुंभ

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के ओएसडी रह चुके हैं। आप पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय में चेयर प्रोफेसर हैं।

भारत साहित्य सृजन का अद्भुत देश है। विश्व में प्रसिद्ध भारतीय क्लासिक की अपनी अनुगूँज है। कालजयी कृतियों के अलावा दूसरे जो साहित्य सृजन हुए वे भी लोकप्रिय हुए। यह सच इस कि भारत में अन्य उत्सवों की भाँति रचनाधर्मिता के भी उत्सव साहित्य अकादमी व भारत सरकार के अन्य सम्मानित संस्थानों द्वारा आयोजित होते रहते हैं। इसी कड़ी में देश की राजधानी नई दिल्ली में साहित्य अकादमी का साहित्योत्सव अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि ऐसा दावा किया गया है कि यह एशिया का सबसे बड़ा साहित्य-महोत्सव है। अभी भारत में प्रयागराज में महाकुंभ आयोजित हुआ था जिसमें भारतीय अध्यात्म व आस्थाशील लोग आए। यहां करोड़ों भारतीय माँ गंगा में डुबकी लगाई। अब एशिया का साहित्य महाकुंभ 7 से 12 मार्च तक दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित किया गया। इसमें ज्ञान व प्रज्ञाशील लोग भारतीय साहित्य सर्जना की नदियों में डुबकी लगाने के लिए एकत्रित हुए हैं। कहते हैं गंगा आदि नदियां मोक्ष प्रदान करती हैं लेकिन इस भारतीय भूमि पर आयोजित साहित्य महाकुंभ में एकत्रित जन ज्ञान व चिंतन, भारतीय दर्शन व सृजन में डुबकी लगाकर तात्विक-शक्ति प्राप्त कर पाए।

इस महा-आयोजन में देश के विभिन्न हिस्सों से 50 से अधिक भाषा-बोलियों में लिखने-पढ़ने, सोचने-विचारने वाले 700 से अधिक सर्जक, लेखक इसमें शामिल हुए। विश्व के उत्कृष्ट साहित्य सर्जक अच्छे राज्य की परिभाषा इस प्रकार भी करते रहे हैं कि जो राज्य अपने साहित्यकारों, कलाकारों, चिंतकों, भाष्यकारों एवं दार्शनिकों का आदर करते हैं, वे कल्याणकारी राज्य होने का शौर्य सौभाग्य प्राप्त करते हैं। भारत सरकार के ऐसे आयोजन इस बात को प्रमाणित करते हैं कि भारत अपने विरासत में प्राप्त साहित्य, चिंतन, सृजन व नवाचार को सुरक्षित, संवर्धित व प्रोत्साहित करने में रुचि लेता है। निःसंदेह इस महाकुंभ की संकल्पना, आयोजना और उद्देश्य का अभिवादन व अभिनंदन किया जाना चाहिए। केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत व साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव दोनों बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इसे मूर्त रूप प्रदान किया है।

डॉ. के. श्रीनिवास राव ने जब से साहित्य अकादमी में बतौर सचिव कार्यभार ग्रहण किया है ऐसे आयोजनों की श्रृंखला बढ़ी है। साहित्य अकादमी के इस साहित्योत्सव की भी आयोजना, संकल्पना के पीछे भी डॉ. राव की अपनी इच्छाशक्ति व सक्रियता दिखती है तभी देश के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार दिल्ली कूच करके इस महाकुंभ में आए। हर राज्यों का प्रतिनिधित्व हुआ। हर बोली-भाषा के लोगों का संगम हुआ। पुराने चावल भी इस साहित्योत्सव में आए तो नवधा लेखक, साहित्य प्रेमी ने भी इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति अंकित की।

बहुधा यह देखा गया है कि साहित्य व पुस्तकों से दूरी की बात की जा रही है। इंटरनेट, मोबाइल और एआई के युग में चुनौती भी पढ़ने की संस्कृति के समक्ष दस्तक दी है। पढ़ने की शैली नई पीढ़ी में बदलती जा रही है। साहित्य अकादमी, संस्कृति मंत्रालय के इस आयोजन ने सिद्ध किया है कि साहित्य अकादमी जैसी संस्थाएं जब तक इस देश में रहेंगी, न पढ़ने की संस्कृति खत्म होगी और न ही पुस्तकों के प्रकाशन रुकेंगे। पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी को सीखने, संवाद करने का भी यह मंच बन रहा है क्योंकि इसमें देश की हर विधा के प्रतिष्ठित साहित्यकार अपने चिंतन व परिमार्जित साहित्यिक सिद्धियों को अभिव्यक्त करेंगे। यह प्राचीन काल में किसी बौद्ध संगीति के समतुल्य आयोजन कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्तिपूर्ण बात नहीं होगी।

देश में हो रहे परिवर्तन को समझते हुए उस अनुरूप साहित्य सृजन करने, साहित्य को गतिशीलता प्रदान करने, नवाचार करने, अभिव्यक्ति को नई उड़ान भरने, देश को गतिशीलता देने व प्रकृति व वसुधा की अच्छाई के साथ जुड़ने हेतु ऐसे सद्प्रयास किया जाना चाहिए। यदि मैं इस आयोजन को खुद के साथ जोड़ूँ तो मुझे कहने में यह जरा भी गुरेज नहीं कि यह कार्यक्रम बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। मेरे विश्वविद्यालय में देश की राष्ट्रपति का आगमन हो रहा है और मैं साहित्य व सर्जना से इतना जुड़ाव महसूस करता हूँ कि उस महत्वपूर्ण कार्यक्रम की अपेक्षा मैं इस साहित्योत्सव में बतौर आमंत्रित लेखक सम्मिलित हुआ। मुझे दर्शक दीर्घा में दीक्षांत समारोह में घिसीपिटी बातें सुनने की जगह साहित्योत्सव में कुछ नया सीखना अधिक पसंद है। यह शक्ति साहित्योत्सव में ही है जो किसी लेखक के लिए अहम हो जाता है। मेरे जैसे साहित्य में अभिरुचि रखने वाले देश के साहित्यकारों में मुझे ऐसी ही अभिप्रेरणा का आभास होता है। यह आयोजन इस प्रकार यदि खिंचाव रखता है तभी इसकी अपनी अहमियत भी है।

भारत में साहित्य को नए प्रकार से देखने, समझने, सृजन करने का यह सबसे उपयुक्त समय है जब विभिन्न विचारधाराओं, भाषाओं, अभिव्यंजनाओं में एकात्मकता सी देखी जा रही है। पूरे देश में लेखन शैली की धार पूरी धारा ही परिवर्तित करने की कोशिश में है और नए तरह की साहित्य संवेदना अपना पाँव पसार रही है। ऐसे समय में साहित्यकारों का यह महाकुंभ निःसंदेह भारत की नई पीढ़ी में नई लौ प्रज्वलित करेगी और भारत में बदलाव भी आने वाले समय में दिखेगा। वास्तव में साहित्य में ही वह शक्ति होती है जो अपने तरह के देश, काल, वातावरण और मानस सृजित कर नए कलेवर में सोचने समझने की क्षमता पैदा करती है। अब एक बार पुनः भारतीय कालजयी कृतियों को आज का लेखक बहुत गहराई से समझने की कोशिश में लग गया है। इस आयोजन से क्या कुछ निकल कर आएगा, यह तो वक्त तय करेगा लेकिन एक बात तय है कि भारतीय नई पीढ़ी व साहित्य, संस्कृति, समाज व देश में कुछ अभिनव होगा।

साहित्योत्सव के समेकित परिचर्चाओं पर अगर दृष्टि डालें तो इसका संपूर्ण कार्यक्रम बहुत ही लुभावना लगा। प्रत्येक विधा को महत्व दिया गया है। साहित्य अकादमी अवार्डी को सम्मानित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया है जिससे इनकी सर्जन की ओज से पूरा कार्यक्रम प्रभावी बने। केवल कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य आदि में स्थापित साहित्य सेवियों को ही नहीं आमंत्रित किया गया बल्कि देश के सुप्रसिद्ध चिंतकों, साहित्य अकादमी अवार्ड प्राप्तकर्ताओं और नेतृत्वकर्ताओं को भी इसमें शामिल किया गया है। अभिव्यक्ति में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी स्थान देकर इसको श्रेष्ठ आयोजन बनाया गया है। साहित्योत्सव के इस महाकुंभ में निश्चय ही देश का प्रज्ञाशील समाज बहुत ही लाभान्वित होने जा रहा है।

एक समय था जब भारत में साहित्य रचने वाले बहुत ही बेचारगी के जीवन जीते थे। आज बाजार ने साहित्यकारों को भी अपने लिए नए-नए दरवाजे खोल दिए हैं। वह सोशल मीडिया प्लेटफार्म अनेक साहित्यकारों ने चंद समय में काफी ख्याति अर्जित की है। सूचना प्रौद्योगिकी ने साहित्य को सुगम व सृजन को धन सम्पन्न बनाने में सहयोग प्रदान किया है। सिनेमा जगत में अनेक साहित्यसेवी अपनी कलम, स्याही व प्रज्ञा के बलबूते मनचाहा धन अर्जित कर रहे हैं। साहित्य में पहचान का संकट अब कम हुआ है। साहित्य अकादमी ने अनेक साहित्यकारों को नए पायदान देकर सदैव आगे बढ़ने हेतु सहयोग किया है। यह एक सात्विक व पुनीत भारतीय सेवा साहित्य अकादमी को बड़ा बनाती है और साहित्यकारों को पंख प्रदान करती है। यदि भारत में इस प्रकार के अभीष्ट अपना स्वरूप पाते रहे तो भारत की नीरसता दूर होगी। साहित्य की हलचल से देश में प्रगति के नए रास्ते सृजित होंगे। हमारे देश के इन सभी अभियान में लेकिन आज क्या नया हो सकता है, इसे अनुशासित तरीके से जिम्मेदारियां भी समझने की बारी है, यह भी इस आयोजन में शामिल लोगों को सोचना जरूरी है। स्वयं को आत्मावलोकित व प्रश्नांकित करके भी सच्चा साहित्यकार बहुत कुछ देश को दे जाता है यदि यह साहस भी इस महाकुंभ में प्रकट होता है तो निश्चय ही हम यह महसूस कर सकते हैं कि हम सभी एक बेहतरीन भारत गढ़ने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।